

१०९ याणव्यनीति नेवारी भाषा रजदित

ASHA ARCHIVES
ASHA ARCHIVES

3353

का. वे वा वे सा नवा के नय का  ओ के की व

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्रीगणेशायः॥प्रक्षम्यतिनसाविष्णुर्वैद्योधिपतिप्रभुं॥नानाभस्माद्धृतं वक्षनाकनीसमृद्धयं॥प्रोक्तं अधिपति
रुत्तं विष्णुत्वं नमस्कृत्या जव नानाभस्मपिकास्य नाकनीनिमुहुनगयाखं ऊनक्राय॥१॥अधिधिवमिदं
भस्मननाहृत्यतिरुत्ततः॥धर्मायदधविनयं कार्यकार्यभुण्णुण्णुं॥निधयमानूष्यनध्वभस्मधनतपंनं
त्वसलकावधर्मनं अधर्मनं सयुवकार्यभुण्णुण्णुं॥२॥तदहं संप्रवक्षामिननाध
हितकाम्यया॥येन प्रक्षाप्रवर्द्धनं मागवहितकानिधी॥३॥मनूष्यातंहितयायकामनान ऊनक्रायव
क्षप्रक्षावक्षमनूष्यध्वभस्मधनकावनामनहीतयाकार्थध्वभस्मनहीतयाकरवा॥३॥मूलसुगुं प्रवक्षा
पिचानकनगुणधितं॥यनविज्ञानमागृहसर्वह्वं हिजायगं॥मूलसुगुं व ऊनक्राय रूपोदयानक

नृषिर्माया गवक्षपूनुषधनध्वभस्मसुसयामागृहगार्थपनमध्वनस्यद्वगएविष्यवर्द्धमानरुन
अर्थरुयुव॥४॥मूर्खशिखापदरुनदूष्टाम्नीरुनरुनवा॥द्विषतास्यप्रथारगधपधुगा
व्यवसीदति॥मूर्खजानिस्नथशनकवनिगुम्भीआएनधवियंथरुलगवविग्रहयादवादाभक्वसं
धियायसुथशनध्वनयनकावक्षानीरुलसनाभवसानयादवनीवक्षायरुव॥५॥गुधिरिःसहसं
पर्वपधुगेसहसंकथा॥कलिरिसहमिग्रत्वंकुर्वाधनावसीदति॥संगयायशनं गुधिरिक्ववववा
क्रायरुलंक्रानिपधुगक्वमिग्रसर्जनयायशलं कुलवंगक्वथथयाक्वजनभवसानवन्यसराका

यमहम ॥ ६ ॥ ॥ उन्महानां गुज्जानां मयपानां च दनिनां ॥ मृदीर्घा नाकुलानां च विर्वसिनिगता यूपः
 ॥ क्षयवथशन विवथशन धनकावक्त्रवथशन किसिवथशल मिसावथशल नाकुनवथशन धन
 सविष्वास यागसा थवक्त्रया आयु अनीनक्षपिहास्यवनख ॥ ७ ॥ वे निष्ठां सहविष्वासं आननः कर्तुमि
 कृति ॥ सहकाऽप्यसं सूपः पतिरः प्रतिबुध्यते ॥ ग्वक्त्रपूनुषऽन अक्त्रविष्वासयायनं अक्त्र
 सिमाया सह उवयवा दूर्ध्वं सिमानकतिनननिह्युनवायुव ॥ ८ ॥ ॥ धनधान्यप्रथाऽगपूविद्यासंग्रह
 पुव ॥ आहनेव्यवहानपूयकलकासदाभवेत् ॥ धनसाहसयायसवाक्काइकायसविद्याभक्तुसनेस

नय ॥ धकक श्रवहात्रसंधरा धनश्रुसुनकागाउरमाल ॥ ९ ॥ ॥ नयुनः सदृशीमागानगुन
 ४ सदृशीमागानगुन ॥ यसात्रमिमहाद्यार्ज संसात्रादधिदूकन ॥ ग्वक्त्रपूनुषयासामवुं युनवुशले ॥ १० ॥
 दूकनसंसात्रहाकदासमूहसंरुनत्रयलेख ॥ ११ ॥ ॥ मागार्गमासमंतीर्थ विनायकनमवच
 ॥ युनकदात्रसमंतीर्थ मागार्गमासमंतीर्थ ॥ ग्वक्त्रपूनुषयासामवुं गार्गमासमंतीर्थ ववुशलेपू
 कनक्षयातीर्थ ॥ युनकदात्रसमंतीर्थ मागार्गमासमंतीर्थ ॥ ग्वक्त्रपूनुषयासामवुं गार्गमासमंतीर्थ ॥ १२ ॥ विद्या ॥
 दूयकनुयानां क्रमादूयं नयजिनां ॥ काकिलानां स्वर्नूयं नात्रीनूयं यदिवना ॥ कमानयाः
 दकायां नूयकन विद्या नयजिनां काया नूयकन क्रमा ॥ काकिलया नूयकन स्वर्न नावियात्रप

एवमनखनपुत्रं

लाक्यामर्गधर्मकृत्यामनर्गनसूयकाय॥१८॥ ॥अत्रमात्राअत्रमात्रासुविशंप्रयच्छः
मिअनकाहारयदोजयिअनविनसुमाशाधमजमविवर्धधमप्रनियानयाकर्मधमविः
आसदकंनमदलनकाकर्मधदार्कववधाय॥१९॥ ॥युनयविनाउवालेमीइयत्तीनयेववः
यत्तीमातासुमात्राअत्रेनमात्रसुमाशागुन्यामीनाजाअमीलाअयामीधवमुयमामधुः
मानधदार्कमामअय॥२०॥ ॥लालयसीअवयाविदसवअविमाउयनासंघायेकरसवधः
युनमीउसमाअत्रन॥गवर्कयुनयमाकायदादेतासुचुंठनकुयजिद्विनामोउअयय।जिमसुः
ददगदावकायवाववामिउरानथ॥२१॥ ॥लालयददवादाखाःमाउअदहवायुताः॥गस्या

ममः

न२

युनयविनाअमाउअनकुलालयन॥कायमात्राधवसूखनकुयानअनकदाअनमाउमपतया
कावअनकगुणधनकनदावकायैथइननिआकायैधइनमाउलथमाल॥२२॥ ॥नूविण्यस
आःस्यामायुकायांकिंयथाऊनीमावलोयदिनस्यामायुकायांकिंयथाऊनी॥गवर्कयुनयविशाम
ननूविनधलीवकनांअस्यागकायिवकनांनूविनलंअस्यासमउमदावयुकावकनकुयुयोजने
॥२३॥ ॥युनयुविविधेःगायुनिमास्यासमनवूधेनानिहिकावृद्धिसंयन्नाहवनिखलपूजिता॥२
ज्ञानिलाकनकायजाऊलथगायुसकायगासुसवदावलाकसमसुनमानिव॥२४॥ ॥य०पुत्रके
मात्रयासय००५रात्रवाहक०य००५जिमात्राया०युनदिनदिन॥आनकमविर्सीधवकाहर्षं

धर्क्यापकाधर्लममालनूविमधल

य

का अलासथायममन नमु स्यं दून आसं नमु ससनसा संमाननक्षत्रदाव कवृयव नमु संसलसानाजानं
 धजानं मांशयायूव दिनप्रतिनमु स्यं दून आनं ॥ २३ ॥ ॥ गुणमृत्तिर्मांशयत्नं किमांशपेः प्रथाजनं ॥
 ॥ विक्रयननयधुक्तिः गात्रः क्रीनविवर्जितः ॥ गुणसज्ञया दून अलायननदु प्रथाजनं इदं ज्ञायमश्वर
 सा स्यं दून कारवायकं मूलमवर्तनं ॥ २४ ॥ ॥ ननस्याह नर्तनं नूयस्याह नर्तनं गुणं ॥ गुणस्याह नर्तनं
 नं ज्ञानस्याह नर्तनं क्रमा ॥ यक्षमनूष्याया आह नर्तनं नूय नूयस्याह नर्तनं मुद्यः गुणयोः शत
 नर्तनं ज्ञानं ज्ञानया आह नर्तनं क्रमा ॥ २५ ॥ ॥ गुणं यच्छिमा नूयं गीलं यच्छिमा कुलं ॥ सिद्धि
 यच्छिमा विद्या रागयच्छिमा धनं ॥ नूयमखनय गुणदकून कुलमखनय गीलया दून विथामख

नय सिद्धिदकून धनमखनय दुरुकुका दकून ॥ २६ ॥ ॥ अगुणस्याह नं नूयं अगीलस्याह नं कुलं
 असिद्धिदकून विद्या अरागस्याह नं धनं ॥ गुणमसनदाव नूयखं शालनं गीनमहि नदाव कुलवं
 शालनं असिद्धिदकून दाव विद्याखं शालनं दुरुकुका मदनदाव धनखं शालनं ॥ २७ ॥ ॥ गुणं
 ह्यायन नूयं गीलं ह्यायन कुलं ॥ सिद्धिह्यायन विद्या रागं ह्यायन धनं ॥ नूयया आह नर्तनं
 नं गुणं कुलया आह नर्तनं गीलं विद्याया आह नर्तनं सिद्धि धनया आह नर्तनं दुरुकुकि ॥
 ॥ ॥ सकलथाययन कर्मा यूरं विद्यासूयाजयन रागनयाजयन मिर्धमो निथाजयन ॥
 कन्याजाजलधनं हिम्यकुलस कायजाजलधनं विद्यादका स गदथाजलधनं आयकोस

॥ अथाजलथ अमोस ॥ ३१ ॥ ॥ नाह्यवृत्तिवोमनू न्रीतिनिर्मनसातन । अथसायमहायानां तातिपा
 नानहादधि ॥ ३२ ॥ अथायथाकदाव मनुष्येन उच्यते मनुष्येनालव कदावमनुष्येनागमममूदवासा
 यमजिवरथ धनार्थनहानिलाकसी उधागयायमान ॥ ३३ ॥ ॥ कनचनदुन वादनेकाकनन
 वा अथन्यदिवर्गक सी दानाश्चयनकमोस ॥ अष्टिदुन दिनयनि ॥ अथन्यकनक आदकि अकनच
 नचनगाक दानाश्चयदिनयनि अष्टिदुन अष्टादिनगाक ॥ ३४ ॥ ॥ अकनानां सहप्रावि उजन्वा
 निविपीलिका अगच्छन्नेननजा इति यदभकनगच्छति ॥ आसमवृष्टं वनसा सायानिन अलक्षि आज
 नवने मवृष्टं यानसा गनूत न ॥ यनागमच्छनसा मवृष्टं संयनिन गनूत लीहिक्धाया उर्जाया
 दानयाय ॥ अथकसीन धनता विहायनं गच्छति ॥

राम
 ५

अर्थन ॥ ३५ ॥ ॥ ननेयथो ननिविद्या मने ॥ अथनमानुहा । ननेदमोथका मय्य शायामच्यधने
 ने ॥ धनसाहस विद्यायन अथनजाम अमोयाय धनना मानाह न उदवजा मवृष्टं हतासनमने
 लाखदअर्कथखन ॥ ३६ ॥ ॥ पुनसुष्टस्वया विद्या युकननधननवा । अथवा विद्याविद्याचतुर्थ
 नायलखन ॥ विद्यासय धनमादव अथवा पुनसुष्टस्वयादान अथवा गुणपासनपाव असागुनयान
 धनविद्यं अथवा विद्यान विद्यादिन ॥ ३७ ॥ ॥ अकाकन ॥ अकाकन यागुनना हिमन्यन ॥ स्तोनथाति
 ननगत्वा आधुलस्यपिजायन ॥ दुग्धक आखनस्यदक्ष रुनसर्न पुननिन्दायाककालभानकिजमसि
 वायायानिसजायनवावनिथं याधयादाव जन्मका अथरुना ॥ ३८ ॥ ॥ अथकं प्रतिपाधीनः

नाथीनं गुप्सु निर्वृत्तं न तस्मात् सहास्यं जानगर्हं वदिय ॥ गुप्सु कर्मसमं यथिसस्यं दाना मुग
 र्थाभावात् न सा लव न या लान दव मा चार्थं धनं सुहास्यं सहास्यं सहास्यं सहास्यं ॥ ३५ ॥ ॥ विलिखितमनाः
 नसां या विद्युर्निद्रा संग्रहं अथो न द न वी विद्या यथैकं अथ या नि विद्या सिकलमिद्या पात्र लव कलक
 मिद्या पात्र लव नास्य सहास्यं साधुजनवा मित्राया यथा सुहास्यं धनं नास्यं न खस्य मायमद्वय अकनत
 सुहास्यं ॥ ३६ ॥ ॥ नहि जनानि सुहास्यं अकनतं गुणद्वयं गुणद्वयं गुणद्वयं गुणद्वयं यथा दधि द्युतं यथा ॥ ३७ ॥
 नास्यं अथ यमद्वयं अथ यमद्वयं गुणद्वयं गुणद्वयं गुणद्वयं गुणद्वयं यथा दधि द्युतं यथा ॥ ३८ ॥
 मानसं न अर्थं ॥ ३९ ॥ ॥ किं कृतं न विना लनं गुणद्वयं न विना लनं गुणद्वयं न विना लनं गुणद्वयं

राम
 १

द्वयं ४

किं कृतं विना ॥ किं कृतं लनं कृतं यथा कृतं सुगुणं लनं कृतं ॥ ४० ॥ ॥ किं कृतं लनं विना लनं विना लनं कृतं यथा कृतं ॥
 कायद्विधं न निगुनि न दव कृतं यथा कृतं ॥ ४१ ॥ ॥ किं कृतं लनं विना लनं विना लनं कृतं यथा कृतं ॥
 अकलितं विविदां सो दव न वा यि यथा कृतं ॥ यथा कृतं यथा कृतं कृतं यथा कृतं यथा कृतं ॥ ४२ ॥ ॥ नावार्थं विना लनं ॥
 नया दानं नास्यं कालं अकलितं न सनं गार्थं यथा कृतं यथा कृतं ॥ ४३ ॥ ॥ नावार्थं विना लनं ॥
 विद्या यावत् यथा न ग कृतं ॥ ४४ ॥ ॥ नावार्थं विना लनं ॥
 मूढया लया यमधुना न नाम लागल विव समूढया न या यमधुना न नाम कृतं यथा कृतं ॥ ४५ ॥ ॥
 गुणसद्वयं यथा कृतं विना लनं विना लनं कृतं यथा कृतं ॥ ४६ ॥ ॥ नावार्थं विना लनं ॥

गुणयुजायार्त्तं वव् कायश्चयसद गुणधलदाव कृपुलं समं मय नयुजायार्त्तं गुणमधलदव
 वव् कृकयार्त्तं युजामयाक ॥ ४४ ॥ ॥ गुणः कृते निद्रुतलं द्रुनयिवसर्गायार्त्तं । कटकी मधमा
 यस्वयंगकुनिमद्यदा ॥ गुणवन्कृत् वसत्रयलथरुन साधुजन वगनयलथरुन थर्थताविन
 दसनं कटकिखानयानान रुमनरुनववथ अर्थलाकवनिव ॥ ४५ ॥ विद्या चैव द्रुयनं नहि
 लयनाक्रम ॥ स्वदगयुजिनाजा विद्यासवद्रुयुजिना ॥ यजावा विद्यागापु सवर्मा ॥ ४६ ॥
 यजाकर्त्तव्यवनाष्टरुक्रमानियायव यननाष्ट समाना मयाक विद्यागापु सवर्मा ॥ ४७ ॥
 नैयुजार्त्तमानायायव ॥ ४८ ॥ ॥ यकनायिसंयुजन विद्यायुकेन साधुना कृलं द्रुयवर्षिहिन वक्त्र

नेवयुकायार्त्तं ॥ सयुजयादन विद्यावन्साधुयादन कृलगायनवर्षिहयादन गर्थं वदुयादनं चन्द्रया
 किहिद्युगयाययुयर्क कृककायनमकशना ॥ ४९ ॥ ॥ विद्यायाः राजनकल्पित कल्पिद्वयसाराजनं ॥
 दहया राजनकल्पित कल्पिनाहयराजनं ॥ गुलिचिने लाकया थलं रुधुन गुठिने द्रुयराहुन गुलिचिने
 लाकविद्यासवद्रुयुयदन गुलिचिने लाक विद्यासव द्रुयमधल ॥ ५० ॥ ॥ नमनिरुलिनावृक् नमनिगुहिना
 जना ॥ गुककाष्टं वमुखेथ हिद्यननचमयन ॥ ससवसिने भवनमस्कानयान गुणज्ञानसवर्क नभवनस्कान
 नयादातवन गदसिधरुने यलखूर्यमजिद्वनयनक्रमजिद्व मुखलाक कृयकानमजिद्व ॥ ५१ ॥ ॥ नहि
 कम्पो विवत्तानि सीक्षाकालप्रयाजन आहारनमधूननिद्रा तथा स्वाध्यायभवव ॥ धयताकर्मसं ध्याकालसमग

य
 मुखलाकं थरुन

व आहाने मेधून निहा सा आय धन मग व ॥ ७० ॥ ॥ आहाना काय न वाधि गे न म्भू न थ जाय न ॥ अलक्ष्मी कथ ॥
 या ॥ स्या ॥ अदायू ॥ अय ॥ सनिन सन लसा ॥ वाधि शूय ॥ अय मंगया न सा ॥ गक सऊ क ॥ साजा वूय व दन स ॥
 लक्ष्मी मायूत ॥ या ० या न सा ॥ आयू मायू ॥ धन स निन स म ग व ॥ ७१ ॥ ॥ वद व दान न लक्ष्मी यज दाम य लाय ध
 ॥ आनी द्रो दय ना निरु ॥ नम ना का यू ना हि न ॥ गवर्क्ष वा क ॥ वद व दान ग सन सन ॥ जय दाम दि या स व ॥
 नी ख विय ल सा द ॥ न जान या हि न या य थ र्थि गवर्क्ष ॥ ७२ ॥ ॥ प्राकृ सि ॥ मदी याल ॥ विद क र्म विद
 कि न ॥ विधू ने च य निहा गी ॥ सम दू ॥ र्व सम ॥ सु र्व ॥ हानि का म ल ॥ विद व च न म द्वा क ॥ आय हि वि न स या
 गी रु व ॥ दू ॥ स सु र्व व ॥ ल स र्व ॥ गवर्क्ष ना जा या य दू ॥ ७३ ॥ ॥ कूल नी ल गु ॥ य न ॥ स व ध र्म प ना य ल ॥ प्र

७

रामः

वी ॥ व न सा द का ॥ ना जा ॥ का वि धिय न ॥ कूल व न ॥ नी ल व न ॥ गु व न ॥ सु व न ॥ अ मि क च न वि व द ध
 क मा व न ॥ थ र्थि र्क्ष ना जा या य दू व ॥ ७४ ॥ ॥ कु न र्थ स नि न स दू ॥ अ य ग क स द र्ज न ॥ अ ना य च य क र्ण न
 ना धिय र्थ नि या ज थ न ॥ आ धि ॥ काम स न न ॥ ला हि ॥ हानि म र्श व ॥ आ र्ज व ॥ आय म या र्थ व य या क ॥ थ र्थि वि न
 जा या य म ग व ॥ ७५ ॥ ॥ स ल वृ हि दि ना धी न ॥ स व न स य नी क क ॥ गु वी ॥ य य व सा यी य ॥ ध र्म धि ॥ का वि धी य
 न ॥ कृ का र्ज र न स र्ज ॥ डा का र्ज स हि न न ॥ नी ल व न ॥ य व न या क र्क्ष ॥ अ मि क अ य ॥ ७६ ॥ ॥ अ य र्थ व क
 ना या स ॥ स व र्क्ष ॥ वि य द न न ॥ आय नी ल गु ॥ य न ॥ अ य व या वि धि य न ॥ व य आ दि न ग र्क्ष ॥ अ य म या क न
 दि रु द स व ॥ ला क व व व ॥ नी ल स र्क्ष व हि द ॥ गु व न ॥ ध र्क्ष वे य अ य ॥ ७७ ॥ ॥ वि ह वि ना म हा द क ॥ अ मु क्षी

११

कं मुखे दास। के नाद नाव हा निवृत्त नंग क॥ ५४ ॥ आह निआस मानु सुनि नाह सुथा पु० ४॥ ज सस्वर्गे
 निवाप्य युक्त नय धर्म गेम॥ कानिया जलया काये स नाजा स स्वता पु० ४ द न ज सुकी हि दय यन प्र
 नद्या कश्य लकी वृद्धि रयू॥ ५५ ॥ ॥ मुखे निआस मानु जथा दाया मही यन ४ अय ४ ॥ धन गण्य न
 नक यन नैव ॥ मुखे दाया जलया काये स नाजा स स्वर्ग दावन दयू अकी हि द्याय यन प्र स नन कर्वे नि
 वा ५६ ॥ ॥ न साहू मीध ना निर्य धर्म कामा धे वृद्ध अ। पु० व न निआस न पु० वही न विवर्ज यन ॥ धन न ग
 का ना जान धर्म अर्थ काम वृद्धि या यन पु० व न न क जल य माल पु० वही न क मा उ न माल ॥ ५७ ॥ ॥ य कि
 विल न न रु स ४ पु० व या य दि वा पु० व न न स व ड न न जा सू क ने द सू ने न वि ॥ पु० व न क या जल यान ध क

१२

न पु० व या द न पु० व या द न सू क न या द न द सू न या द न नाजा स लकी वृद्धि यायू ॥ ५८ ॥ ॥ मथा हर्म य नि
 कय नाय ना उ न शु द न ४ न था यून य म या र्थ क ल नी ल न क मो ना ॥ ग र्थ दू र्थ दा र्थ ना क र्थ द न लू य वि का र्थ
 न क ल स र व न यून य य वि का या य ॥ ५९ ॥ ॥ कान र्थ य क व रू हा वा न्ध वा वा ग ना ग म आय लाल
 था मि र्थ र्थ य वि र व क य ॥ उ न्ना व न हि न सी या व आ क र्थ स र्ज न हि न सा य आय दा र्थ न स हि न सा
 य मि र्थ वि य हि स सु की ही न सा य वि य य म द न दा व ॥ ६० ॥ ॥ रु ४ व क वि का ना जान उ रु मा ध म म क मा
 ध न नि आ सा य थ आ ग्य सु वि ध य व क मो सु ॥ उ न्ना व न पु० न ग वि धि हि न म हि य स ना ना य न थ य नि
 हि न य क हि ल जा ज ल य म हि न य क म हि द जा ज ल य ॥ ६१ ॥ ॥ आ ल र्थ मुख नैव नैव नैव वा ग नि नैव

१२

मूर्तिद्वयमरुक्मयं, यजुः, ह्यननादियथा अलागी, न्याययव, काशी, वीकावर्षद्वयनरुक्मि, सखलथः
 विगुडगोवन, नाजासीताउतमाला ॥ १५ ॥ ॥ यथास्वामिनमस्युय, मस्युयकथनीयअन, कथनागविशः
 यस्तु, तस्माच्चकननागनी ॥ १६ ॥ ॥ उग्रमश्वस्वामिनाउतमाला, उग्रमश्वलसनी, कथनीरुलदावे, काशीयाहिमम
 हिममसलदाव, धर्माजागालतमाला, धर्माजायाकायेनामशय ॥ १७ ॥ ॥ वामर्थापुनामुखेऽयसकार्त्त
 विजात्रकशानिस्तदावभूवगन्ध, यजुदस्यमदहसूय ॥ १८ ॥ ॥ विद्यहि, समनीवश्री, मुखकाय, स्यासीकाशमयाव
 डामिसा, सनमद, सज्जनमद, धर्माजागालाव, माहोयूययासुखदय ॥ १९ ॥ ॥ नमस्तुत्यविशिष्टं न
 कथितुम्यविश्वियथा कानलादवजायते, मिशालिविश्वरुथा ॥ मिहदयकाव, सज्जनमदयकाव, मिह

सहस्रसूक्तं ३

१३

वा, सज्जनवा, गुरुशयूकावलादतदाव ॥ २० ॥ ॥ कार्यार्थरुजगलाका, नलाकऽयत्रमार्थगऽवसाऽक्रान्तः
 कथीदृष्टा, यत्रियजहिमाननी ॥ कार्ययाजूनकमल, लाकयाकरुजलथमाल, गार्धनाधनमा, सानानदृष्टा
 नमदयाव, मासागानार्थ ॥ २१ ॥ ॥ कृतायसनिनानिडा, अरुक्मयकृतायतिऽकृताऽसोखीदविदस्यदृज
 नस्यकृताऽकृता ॥ यजनमनरुक्मि, कृदमद, नासनकीया, सुखसर्वमद, दृजनयाकृतासर्वमद ॥ २२ ॥ ॥ कृता
 नस्यकृतामाना, दृजनस्यकृताकृता ॥ वेष्टा, श्रीर्गाकृतासदा, कृताऽस्यधर्माकामिनी ॥ खया, मानीखमद, दृजन
 या, कृतासर्वमद, वेष्टा, श्रीया, सनदमद, कामियासुखसर्वमद ॥ २३ ॥ ॥ दूर्वलस्यवर्लनाजा, दालानां विना
 वर्ल, वर्लमुखस्यमोनर्ल, जीनानां समुर्लवर्ल ॥ दूर्वलयाजाव, वर्लशर्ल, बालकयाव, वर्लशर्ल, अशुनीनिया

शाय

आ॥८॥ ॥ अनाथा नांद मित्राणां बालवृद्ध नयनिर्वा। अनाथ बलिहाराय सर्वे आर्थावागमिणा निर्मल न
 नासनया बालकया आ० या० जगमया विदसिया धनसंगतिशून्य नाजालं ॥८॥ ॥ आश्विन स्याथ हीन स्या
 गुरुविजयिण स्यात्र। हृदयलोकाद गवस्य सुहृदगण मोक्षार्थं ॥ आश्विन पितृ लयार्थं दक्षिण विजयना सोम
 दक्षया हृदयस्य साकदसं प्रादक्षिण्या धनया डावसि दक्षिण नया खाल साय ॥८॥ ॥ अशुभ रासुभ १३
 यदुहिके गुरुविग्रह। राजकायप्रमाणवा यक्षिणसिंहाश्वरा ॥ आयसं आयदाम दलमदलं गुरुवा
 कायदरुकायं राजसकृद्विहिनदासं गुरुवाकायदरुकायं धनसविनायकायकं दक्षिण
 या॥८॥ ॥ रावसुद्धिमनूयाणां ज्ञानार्थं सर्वकर्मसु। रावनवृत्रिनाकाका रावद्विनायनामनूया

हि।

याकर्मोक्तमनसं सिद्धिशून्य रावमातुन श्रीवृत्तलयनं आश्विनया खालं वृत्तलयनं रावन ॥८॥ ॥
 नदवाविग्रहकाय याया (नयमुस्य) रावसुविग्रहदव सुमा रावमहर्षी ॥ सिंदवमदु
 लादी सदवमदु वासंदवमदु रावमातुन खवदवशून्य धनजुधनरावखं गव ॥८॥ ॥ गिष्या
 नांदवनावाया ज्ञानमायार्थदवना। दवनाया विनाहर्षा वाक्क (न) जनदवना ॥ गिष्यायादवनायुन
 गुनूयादवना ज्ञानश्रीयादवना धवयुनू लाकयादवना वाक्क (न) ॥८॥ ॥ विषयस्यार्थ
 वद्वि राजा अथवा दवना ॥ युधाययथा माना मिर्षययथा सुगमा वाक्क (न) याइनी अतिथीं गु
 नूमायइनी दवार्थं मानसायइनी युधार्थं कायसायइनी मिहवाउला ॥८॥ ॥ सुभूतमिद्विना

गीर्वाणं वदन्तं वाक् (॥) गुणं यतिनका गुणं सुधीं सर्वस्या गता गुणं वाक् वदन्तं गुणं
 ददन्तं यदुवर्णं गुणं गुणं वाक् वदन्तं सुधीं लोका गुणं यदुवर्णं लोका समस्तं गुणं गुणं
 गतं ॥ ८८ ॥ ॥ इह मया विवर्णं नीत्रा विवर्णं मा गतं युजनी आ यथा नार्थं सर्वस्या गता गुणं
 ॥ इह मजा निरुलसर्न नीत्रा नीरुलसर्न अस्या गतं यु मवत्तदा व युजा या य माल सुया सिर्न अ
 स्या गतं गुणं ॥ ८९ ॥ ॥ ददन्तं युज यदुक्ता रूपा दानं न युज यतं गूढ युजा यका न व विद्या र्णमहि
 वन्दनं ॥ ददन्तं युजा या क रूपा वन उन्मो वन युजा या क दामन गूढ न युज यतं उन्मो वन वाक् वदन्तं
 जल य नमस्काल ॥ ९० ॥ ॥ धर्मो य मूलं राजानं सुधा मूलं वाक् वदन्तं वाक् वदन्तं यदुवर्णं गुणं

मो सना नर्न ॥ राजा या धर्म मूल वाक् वदन्तं यदुवर्णं गुणं युज यतं नर्व धर्म ॥ ९१ ॥ ॥
 आ वा यदुल न धर्म आ वा यदुल न धर्म आ वा यदुल न धर्म आ वा यदुल न धर्म आ वा यदुल न धर्म
 नथ आ वा यदुल न धर्म आ वा यदुल न धर्म आ वा यदुल न धर्म आ वा यदुल न धर्म आ वा यदुल न धर्म
 नति गकि र्वे न वि य ॥ विहा वा दान गकि र्वे नाला यत य स ॥ ९२ ॥ ॥ यो र्वे नाला यत य स ॥
 मथ र्वे नाला यत य स ॥ यदुल न धर्म आ वा यदुल न धर्म आ वा यदुल न धर्म आ वा यदुल न धर्म
 लला यमद ॥ ९३ ॥ ॥ बाले र्वे नाला यत य स ॥ मनि र्वे नाला यत य स ॥ रूपा नाम विद्यका नी
 न ॥ बालक स धर्म आ य माल आ नि र्वे नाला यत य स ॥ गार्ध्व आ न सा क्रि द म य द न य र्वे नाला यत य स ॥

११

१३

॥ सनमूयहनाधर्मोक्राधेनेवहननयः अहर्तवहननान् यमाधनहननान् ॥ अहं कानिह नन
 वधर्ममायव दधमहननकाव कानमाय यमादमहननकाव दधनामपुहलननय ॥ १॥ ॥ अमीकमो
 हनाहामाहनाहुकिनसाखिकाः डयजीयाहनाकया सार्थेयाकः क्रियाहनाः ममकानकाव दामका
 नहनं साकिमथासनया अनहनननं वगजिदाम कायं वियाकयाहलननं थवनं अर्थनयाकः ॥ ३॥
 माकावनया अनहनलननं ॥ २॥ ॥ दनिदंया विदूः खानि वधनं यमनानिवा दानाहुहलमनानि न
 सादानं विनिवात ॥ यवजनमसदस्य दानमयाकाहलन आवजनमस दनिदंय वधनमयवजा
 यहिनायु थनममालकयागा धर्मयाय दानयाय कीरियाय ॥ ३॥ ॥ अलकावधमयव यय

जानूवजमुय ॥ नाहगकमनूयय यवधर्मवहिदुगा ॥ यवधर्ममननमहनव जूधर्मो कमानूयया
 वासहनलंसा ककथं जनुहनसा मनेथं थननाहग ॥ २॥ ॥ अजदुहनसंसग रुकसाधूसमागमी क
 नूययमकाजानं सननियमनियमां ॥ अथिनसंसात्रकात्रयं दूजनयसंसगतात्रन साधूजनवायसं
 याकन अहनात्रधर्मयाकन ॥ १०० ॥ ॥ निवानकसात्रसंग्रह यथमः गनकसमाय ॥ ॥
 नासथेयवदूयाविद्वान नप्रत्यानीतिवदूया वदार्थवदूयाविद्या वूवनात्रात्रयदूया ॥ विद्वंसिया मि
 खाहनं गमं आजासमिखाहनं नीति दानगयामिखाहनं वद वूवजनया मिखाहनं वनिह ॥ १॥ ॥
 नाजाधर्मोनिधर्मोः वाययायसमागमी ॥ नाजानंदनिवृहिया यथात्राजानधंयुजा ॥ नाजाधर्मोः

[illegible]

११

672

लोहदन्त आजयन् । लङ्घ मर्धय दानन समुत्तुल्य लङ्घ मे ॥ यन्मूष आजयन् नमस्तान्न गूल आजयन्
 रुदन लोहि आज लथ दामन तुल्य कर्क आज लथ कुप निर्गन्तव ॥ ५ ॥ ॥ आस्तु विद्वन् विद्या विद्या विद्व
 यन स्यात् । ग्रह नक्ष्त्र मन्त्राणि यत्र शत यत्न कथ्यन्ते ॥ धन दाखन मवया नावियमन्त मवया दा
 षण्ड न सा गथा गित कात्र समयस् कायन दू विमर्शोदथा गाययायमाल ॥ ६ ॥ ॥ मनसा विनयल
 र्थ वचसान् यथा गयन् । मनु लङ्घ गूल लङ्घा कार्य सिद्धि यजायन् ॥ यत्किया कार्य मनसान् तु विनय
 यन्त म सिद्ध गाल वचने युका गायामन्त ॥ ७ ॥ ॥ उयकात्र गृहीतन गूल गायाम् मूष नन् । यादल
 न्कन कन कलुकनेव कलुक ॥ उचिन्त्या कदापि गूल न यादा उचिन्त्या कदापि गायामाल कलुकनेव
 २५ विष्णुदनि नमस्तस्मै निपुत्र नया वरान् ॥

कलुषनिर्मुक्त्यायार्थं शान्तिपूजनसमयः ॥ १० ॥ ॥ बह्वर्चसिपुस्तुल्यं न्यावत्कालं विधाय यथा नित्यं वसति तत्कालं
लक्ष्मिपुत्रमिवास्मिन् ॥ यद्विद्यमीव तस्मिन् गुरुश्रवणं वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ यद्विद्यमीव तस्मिन् गुरुश्रवणं वसुधैव कुटुम्बकम्
गुरुश्रवणं तस्मिन् गुरुश्रवणं तस्मिन् गुरुश्रवणं ॥ ११ ॥ ॥ हजिककंदूकसुखासधूर्तकिंनरावयः । मेः
धूर्तवदकल्याणि लक्ष्मि कार्यं मधूर्तं विधाय ॥ हजिकसुखं यालुवचनं सुखं यत्र न शनं वाक्वचनं सुखं यत्र न शनं
न वाक्वचनं सुखं यत्र न शनं वाक्वचनं सुखं यत्र न शनं ॥ १२ ॥ ॥ जिह्वाग्रवसनं लक्ष्मीः जिह्वाग्रमिह वाक्वचनं जिह्वाग्रवसनं
जिह्वाग्रवसनं लक्ष्मीः जिह्वाग्रमिह वाक्वचनं जिह्वाग्रवसनं लक्ष्मीः जिह्वाग्रमिह वाक्वचनं जिह्वाग्रवसनं लक्ष्मीः
सुखं जिह्वाग्रमिह वाक्वचनं जिह्वाग्रवसनं लक्ष्मीः जिह्वाग्रमिह वाक्वचनं जिह्वाग्रवसनं लक्ष्मीः जिह्वाग्रमिह वाक्वचनं जिह्वाग्रवसनं लक्ष्मीः

किंवाक्यविद्विदता॥ प्रियवाक्यकालदाव समस्त्याविर्मुक्तकर्म धननवाक्यद्विदमतव॥ १३॥ ॥ अ॥
निदागनदलेव गमुयाविधनायदा। कृदावायदावीत वरुनगागतायिन॥ मिचिद्विशवर्क अगन
कमादशवर्क गमुनगुयदागतायदशवर्क धरत मिस्तुसखययादशवर्क यनभीषययादशव
र्क धनगुगावदननदवर्क वृक्षय॥ १४॥ ॥ आगतायिनमायान् मयिवदान् यानर्ग। जियानर्कजिध
नमीयान् नननवृक्षहारवर्क॥ धनगुगासक्तुनसर्न व्याकृगशनसर्न खरुनकाव वरुवेदसवदाः
कृर्गद्विधन मावकनसर्न वृक्षरुहानमर्कग्य॥ १५॥ ॥ नादुयानयननिर्ह निरुधर्मयनायव
निर्हितयनसेनानियतिधर्मनयालयत्॥ नागास्यं नाक्यायशर्न धर्मसर्न धनदुयनसेनाजयन

यजिष् ॥ १५ ॥ यजिष् यजिष् विष्टि नीयात् सुलक्ष्म दातृ कात्रथम् । माना कात्र ० ० ॥ नि यथा जाना निमान नी ॥ जा
 जासर्ज कृणुते माति नि यार्ज कृणुते । मान दाका नि द दोयवत्रम् हानर्थ लवत्रा दान भात्रक मन्त्रम् ॥
 १० ॥ अत्रि मित्र मूदा सीन मध्व सु सु वित्रा गुन् ॥ आन वृद्धा नि मन्दा त्या सत्र सवेन न श्रुति ॥ गुरु वा गुरु
 नन मित्र वा मित्र यनन मध्व नर्था गवर्क्ष अष्टधय गुरु न मित्र न ममलदा व थर्क्ष या सवे कार्य ना गुरु
 यू ॥ १६ ॥ ॥ अनाथ अथ यार्ज कृत्वा अनाथ ० कलह प्रिय ० अगुन सवे रुक्षीय नत्र ० नीयु विन श्रुति ॥ गव
 र्क्ष मन्त्रान् अयमवस्थं वययाप्त नाना मद्र द ग स त्या यथ लदा व त्राय सनिद मनिद न नवर्क्ष थर्क्ष
 मन्त्र गीष्टु न ना गुरु यू ॥ १७ ॥ ॥ क ० काल ० कानि मिहानि काद ग ० काया याग म ० कल्या ह कात्र म ० गवि

26

विनिष्ठा नाम्ना मूर्द्धा ॥ कुकालं शर्नं सुखिखशय सुदणशय दूविषथाय सुआगमधाय अशयवसु
अगकिशना कुवालवाल धनविनाथवसुखलसु ॥ २० ॥ ॥ सिंहादकं वकादकं विषादकं विदुर्कं वान
वायसायं विनिष्ठा नष्टगुणमुनिगदहान ॥ सिंद्याक कुतागुणमन वाहल्याक कुतागुणमन स्वा
याक यतागुणमन काखयाक दागागुणमन खियायाक वृतागुणमन गाधूयाक स्वतागुणमन ॥ २१ ॥
यहू कार्यमल्यम्भान्नत्र ४ करु मिच्छति । सर्वान्भूषणकार्यं सिंहादकं विधीयते ॥ कुकार्यमज्जान
हयानमनं हननमयासां निकषण यहू नयनिनमन सिंद्याकमनगुण ॥ २२ ॥ वृद्धि यानिदुर्मय
मय वकवत्य विमानत्र ४ कार्यकालाद्ययन्नानि सर्वकार्योपि साधयन् ॥ वाहनार्थिदं ज्ञानिमनूष्यनथ

मकार्ययायमरुतात्तयं वल्लि यनिग्रहयादृश्य धमकार्ययाय रुतकात रुकार्यनयाय ॥ २३ ॥
 यागुहाननचयूद्वेय ससिरागश्चर्वधूम ॥ श्रीया माकृम्युजित् निवाञ्चलानिदू कूटनू ॥ सुथंनवः
 लंददंन गयुवाथीधनय झातिवभूतुल्यखन विरुगभावाताडो नायंतु कत्रयधखन धयताखाः
 याकसनगुण ॥ २४ ॥ ॥ गूरुमेधूनधुखर्त्त कालत्रालयसंग्रहः प्रमादीसूधीरुश्च यश्च निवाञ्चव
 यसाह ॥ मेधूनस गूरुश्च यवतसदूकाय वलसुधव झातिवभूवात्रय प्रमादीमरुय सुधूरुश्च यधर्
 नाकसयाकसनगुण ॥ २५ ॥ ॥ वक्रासियाल्यसंग्रहः सुनिदः गीद्युवननः स्वामिरुक्कथ्यल्लयव
 नव्यानेनागुण ॥ दनकाव अदिकनय मदकाव विरामनसंग्रहश्च गीद्युवनन गीद्युनद्वनयाव

१८

१९

य४

स्वामिरुक्कश्च गूर्नश्च धनयूनाखिवायाकसनगुण ॥ २६ ॥ ॥ अविग्रानवहृत्तानं गीतासूश्चनविन
 किस्सुसंग्रहश्च निर्यं गीती निवाञ्च गदृत्तान ॥ धमयादाकार्यमसिधनात्र आसवयमनव गीतखय
 मनेव दकानसंग्रहश्च यधसनागाधूयाकसनगुण ॥ २७ ॥ ॥ विंगरेतागुणः याका यमुकूमाद्विचका
 लः सज्ज्यातिविपून्सर्वान् नजयधूरुविश्रुति ॥ धननागुण सुनानधनत्रयर्त्त आर्क विचक्रव सम
 गयुदाकां कदत्र विव धर्कैजमनयर्त्त यिव ॥ २८ ॥ ॥ अमूर्खोयामनूयाणां मन्युः सतकचनसां यन
 स्यायकात्रय यसाहावतिविग्रहं ॥ मूर्खमश्व झातिलाकन निनयवचनदकां चनसंभाव किद
 नस्यनयूयकात्रयादनगुनी साधूजनयाविग्रहदयव ॥ २९ ॥ ॥ चकादनः यथग्रीवा यचनकिमर्

गुरुवा असाहि ता विनय निरु नृणां वयं किं वा भाग्या गल यमदु गुरु वि आद र्था ग्य रे नृणां सं गल
 थव वे निरु र्था थथं व थव वे निरु नका व नायू ॥ २० ॥ ॥ यम न स निरु र्था ग थन क ना वि र्हा ति म क व न
 न ग व र्था ॥ यना दा ग न थि यथा ॥ आ य दा या द र्था न का र्था सू या क रु क न थ आ य ति न त ल थ मा ल द र्था
 श्री ना म र्था स्वा व स य गु ग ल सा या क्रि या ग र्था न मा क ल ला य या दा व आ य ति न त ल या र्था ॥ २१ ॥ ॥ २०
 री मा ग र्था र्था स म र्था व न र्था व ली ॥ अ रु न य र्था ना भ न स रु व न थ सा ग र्था ॥ स म रु क र्था र्था वि क र्था नो व
 न रु र्था म र्था मा क मा ग न सा ग ल स म रु र्था स रु व न थ या दा व श्री ना म व ल र्था य र्था ॥ २२ ॥ ॥ य र्था स म र्था व
 वि ना थ अ य न र्था य र्था ना क र्था मा न वि र्था य र्था रु न र्था ॥ य र्था वि र्था ना र्था र्था र्था र्था र्था र्था

२०

क ल ग र्था र्था किं ऊ य नि र्था र्था किं य न र्था न वि ना थ या द र्था र्था र्था र्था र्था र्था र्था र्था र्था र्था र्था
 र्था
 वि क र्था
 र्था
 र्था
 र्था R
 र्था R
 र्था र्था र्था र्था R ॥ २३ ॥ ॥ अ र्था र्था र्था र्था र्था र्था र्था र्था र्था र्था र्था र्था R

२७

मन्थानां मेधुनं जना ॥ अथवा मनुष्या जाजना ॥ अथवा मनुष्य गणं याजना ॥ अथवा मनुष्य मेधुनमदहदावग
 णं याजना मेधुनं जनाव ॥ २४ ॥ ॥ अहिना मदासीकं गृहं गानसवर्द्धिं न ॥ अहिना लकलर्द्धं च न नक
 स्याथना विधी ॥ लंमदाचु मावा मदाचु कुसमादू दूधनमदा कुलग्नीकं छिया रुनदाव धनननक
 विधी ॥ २५ ॥ ॥ कुलजं दायदानाभी लक्ष्मण गदगामिन ॥ धनकं गीयदागीना नदागदू ४ खराजना ॥ धी
 नामसं कुर्तुं नव लक्ष्मणमहालक्ष्मी गददववद्याल सीतास सीतादाक धननं धनन धनकलदू ४ ख
 रागीश्वरी ॥ २६ ॥ ॥ कदावृहि ४ यनाधीना कदावासानिनाद्या ॥ रुगयुर्वार्थसंयुक्तं ४ सर्वकदादविद्यः
 ना ॥ मनुष्यायाक सुशर्नं भवया आदिनवरुनय ॥ कसुशर्नं धनं आद्यममथल कूयासिननवकथर

२१

नं कदावृथा दवधनमायाव विधेयविद्वद्वय ॥ २७ ॥ ॥ अर्थिताया विना सुर्व ४ अवासीयनसवक ४ जीविना
 विमुक्त ४ यथ यथैतदू ४ खरागिन ॥ अर्थितानकसु नयं आवर्द्धं थशव वाधिनं कसु नयं शवर्द्धं भवसाव
 यं शवर्द्धं स्वात्माकं निकषाय ॥ दूखरागीक्षाय ॥ ४० ॥ ॥ यायगुनियमायाति कुक अश विदिनदिन ॥ सनः
 कुलधूर्गायाति यदि गकु समानन ॥ गवर्द्धं मनुष्या न गवनथायस दिनयति दीविकाक्षत्रकु नयं यका
 ल ॥ लुवा सवाहुला धनिनवं दविद्वद्वय ॥ ४१ ॥ ॥ यनानं यनवमुक्थं यनया लं यनविद्य ४ यनस्यवगृ
 हवा ४ गकु स्या विद्विर्द्वय ॥ यनअनस जियनयं स्वाकशन यनवमुक्तिसिं स्वाकथशन यनयान यन
 श्रीसननयादशवर्द्धं यनकुसवसनयं आदशवर्द्धं थशन ॥ लुसवाहुलाशवर्द्धं यनवयाशनसर्ना लक्ष्मी

२२

मायू॥५२॥ ॥अलोद्यानिह नाविहान् नलोद्यायुववानन॥अलोद्याविहवाननीयुवयोवप्रतिहिगव
विहोसिनिधनीह नदावअसुविहर्नयनूवकायकुयदातसर्नयनूवमदातदावसुअधुविहर्न॥५३
॥॥विहवाःसर्वेषुअनू नगनीनागीददिन॥आधुलाःपिनन॥अथायि विधुर्नधनी॥समसुर्वेद
वारवयुजायानं सुनीनधंमखनधनदहसाआधुलननगनंउद्यममनूवकाय॥५४॥ ॥अनमादुःय
नधर्माधनेःसर्वेऽयतिहिनाःजीवनिधनिनालाकमुगाअलधनानना॥उद्यखवकादूनिहर्नध
मोआदिनं समसुधनयतिहायादहर्नं ग्यर्कधनिहर्नउर्कसाकधयनिधनीह नदावसिकंभाया॥
मवर्सयतिहर्नधर्कमवलाखमयायीसंदर्कयाहयदयुवतामलायादूय॥५५॥ ॥अनिसमय

२२

मायन्तु रूतवीयननाहयंअसुअनिखनानूःसर्वेवकुगयालिन॥अनिकवर्सयहिदवहनदावक
नीहिनरुयदयुगथधनसाउर्वेयवर्नमीनमायकनाअर्थमायकिव॥५६॥ ॥कारुकारुकाकानिहर्क
सुखानिचवागिनांयस्यहायालसंदुष्टाकचनसासवगृह॥नागिननिहमनिहनलदावनागीयागुख
मदूग्यर्कमनूवयाप्रीसंदुष्टमहनदावकुयाउक्काहमदू॥५७॥ ॥लोहिककमकानिहसुखनिहर्नम
लागिनांहायाहर्कवगायसागस्यनिहासर्वगृह॥निहदुनवनागीयानायममालधनमनूवयाप्रीथव
वगासवनदावकुयाउक्काहर्न॥५८॥ ॥सर्वेयनवासादुःखं सर्वमासायनसुखं॥अनद्विशासंमासाः
नलकर्णसुखःदूःखया॥कुयासिनंदुःखर्नयनवसासवर्कनयकुयासिनांसुखर्न॥५९॥

र्थं धववसायादकय सुखनलकथन ॥ ४२ ॥ ॥ सुखस्थाननननदुःखं दुःखस्थाननननदुःखं । सुखदुःख
 मनूयात् । वक्रवत्यनिवरुत ॥ गवर्कमनूयात् । सुखया अनननसं दुःखं दुःखया अनननसं सुखं सुख
 दुःखरुनं कृत्वा लयायाकदलार्थं निव ॥ ४० ॥ ॥ वक्रहिर्मूर्खसंद्याने नयाभौ यशुवर्हिहि । कादयः
 निगुणं सदान् मथेतिवदिवाकनं ॥ मूर्खलाक समसुमूढयाने गुणकानखकायमगव रानरुयवग २३
 र्थं सुखं सुनगाकयुर्षायादक नजमदुर्था ॥ ४१ ॥ ॥ असमासहसं गन कानया ह्यधमागति । यथापिसोति
 नीरुम् मद्यमिहविधीयत ॥ असुजनयूषवा संगरुनडाव डयमयूषरुनसर्न अश्वमगतिरुयूग
 र्थं गाधनसा यूनयाक दूदगादाव वनसर्न धधयूव ॥ ४२ ॥ ॥ असर्गयक दधधगा अश्वमायानि साध

वशासा (नैषूतिमित्रशर्कः) समाविष्टिमायन ॥ असाधुवानायाथादायादाखन साधुयनि अश्वमरुनं लंस
 सिद्धनगाकयूल माधर्वदनास माधमवार्नदायार्थं दानय ॥ ४३ ॥ ॥ उरुमेऽसहसं गन कानजातिसमूक्ति । सु
 द्वाह्यानिधायन गुक्तिनेऽकसुमेऽसह ॥ हिग्वानायलागदाव सुर्कडरुमशव खानलाकथानार्थं यानकाव
 सयूटं यमाउसनन ॥ ४४ ॥ ॥ किंकत्रिष्टातिसंयकः सहावदुविगक्रम ॥ यगा मरुलमधुर्क कथायानासुर्गा
 गन ॥ नायंथादावशककाय साहावगुलियाहनमरुव धलार्थं साकन अंवथानार्थं यददूवनार्थं दानार्थं अंव
 यूरुम् यदखादकयमरुर्था साहावदलमरुव ॥ ४५ ॥ ॥ गकयावसुवधन मधुनिमयुक्तिष्ठि ॥ मधुकीन
 समावृष्टि निमिर्किसधुनयन ॥ साखनन खगिनिविदाव दथसंनिवययाव धयागागत्री कस्तिनविर्ग
 न दूदुर्वधयादन निववाक कमजिवर्था ॥ ४६ ॥ ॥ वरुकयुवयाविद्या यनरुसुयुर्न । कायेकालवसं

२५

यथ नसा विद्या न न धनं ॥ यथि स वासी न या विद्या भव या क वा द धन कार्य जूय या ग ध विद्या विद्या मरु द ध
धन न धन मरु द ॥ ७० ॥ ॥ दून कानि च मित्राणि निम्र हानि च वा भ वा ॥ किं यथा जन क र्हे र्वा मथि नानि ह लानि
च ॥ दून स र्वा द मित्र ह म दू वा भ व कु यथा जन या य व ल स क न म दू निरु ल ॥ ७१ ॥ ॥ अरु द्या दू म यू या
नि दून कानि च वा भ वा ॥ कानि चाल खी रु म य ॥ य ॥ कालाना यु ति ष ति ॥ वने स र्वा द मि स्तान दून स र्वा धू जन
व ल स क न म दू या सी न या र्था ॥ ७२ ॥ ॥ यज्ञा व च न ही न स्य क सो ही न यथा न व ॥ नि न था य न ना म स्य ह स या
क न या र्थे था ॥ यज्ञा म दू व च न आ म स व आ नि न थ वृ द्धि र्ने ग र्था ॥ स य ल नू या र्था ॥ ७३ ॥ ॥ कानि च दू म वि
प्रा द्द द म्य भा क ल ह स र्था च ला नानि स र्वा मनि यज्ञा म दू द स न ॥ आ ल स ला म वि ला क स र्वा दू ही नू व
क वा उ स र्थ या म य र्हे व व ध य र्गो निरु ल ॥ ७४ ॥ ॥ निरु ला क य न स वा निरु ल न कु वा तु व ॥ आ य स र्वा क नी ल

का सी १

न लि ३

२४

अ क ४

क ज या य १

स य नि वि द्यु थ निरु ला ॥ क य नी या क स वा मा दान भ गी या क न नि दा मि या क नी ल वा क ध न ड दा य वा र्थ धन
निरु ल र्श न ॥ ७२ ॥ ॥ व न य न क न र्जा प्रा क वि नू या म धि क न का नू य धि नी च नी च रु वे वा र्क स द (न कू ल ॥ ७३ ॥
नि र्वा द सू कू ल स जा य न य क न्या वि नू य र्श न स र्वा वि वा हा या य मा ल नू यि नी र्श न स र्वा नी च म न व ध म ड थ र्द
दू वि वा हा या य न व ॥ ७४ ॥ ॥ वि वा द या म र्ग र्वा क म म आ द धि का र्श न नी वा द य र्मा वि या मु न र्त्न द र्क ला
द धि ॥ वि व स वा न स र्वा अ म र्ग र्श न दा र्वा का य या य अ य वि रु थ य स र्वा न स र्वा ल को य आ ग नू य या क र्श न स
न ड र्म वि द्या र्श न स र्वा स न मा ल अ कू ली र्श न स र्वा मु ल ल र्श न स का य आ ग ॥ ७५ ॥ ॥ क स र्वा र्थ कू ल ना मि वा धि
ना का न यी डि क ॥ क न र्ग वा स र्वा र्थ गि य ॥ क स य नि न र्श न ॥ स या कू न ग दा स मा दा वा धि न र्म म नी ज य न स

नानदूखमसवसंयहिरुनसनअननअनननमलाकमथा॥५॥ ॥कावायसिगु(वायसिनिगु)धवपि
जायन।सूकुमालस्यययसा नालाहंकि क के ग॥दाववहनसन मदाक मदा युवहनसन मदाक मदा
धनाधनसा कामलयलया नालक के गधगार्थ॥५॥ ॥अमर्तनिनित्रवदि अमर्तकीत्रराजन अमर्तयु
ववहिरागो अमर्तवानराभिर्न॥निगकात्रस मीअमर्त दूदनामीअमर्त युववमिसीहनदासा अमर्तवाल
कनकायावचनहनदासा अमर्त॥५॥ ॥दूनेरायाकनीवानि दूनेरुपुक्रमीययु।दूनेरावसुहनामी
दूनेरुवचनप्रियभा दूनेरुहनयाकमिवचन केमावन्सामिध दूनेरुहहिरुनकावपीदूनेरुलाक
नहुकाकवचन दूनेरु॥५॥ ॥नदीनाकाद्वी(वृक्ष)नानीनाअप्रतिवना।मनूयानीनयायाक दूनेरुना

२३

यहनिर्वृति॥नदिदकागर्गगा(वृक्ष)मीगादकाययतिवगर्हि मनूयादकाग नाजार्हि आय दगदकाग
थायस आनाडाथायसहि॥५॥ ॥यहजोहसमाकीर्ण दागीनाम४समाकूलं।हंयाविनदिन४यीसा यथाव
धंनथागृह॥कायकुयमामिगा न सीवेकयादवानसन पीमदनदाव मियागार्थ एरुर्न अर्थकुगुयाला
ख॥१०॥ ॥सर्वेधामवतनाना पीयावत्तमनूहम४ गसाक दर्थनियया गाधयका धननकि॥समसुवत्तस
दकास पीवत्तदुर्हम धनयाकनान धमदनदाव धर्थनिनिगगाउनर्न धनकाय॥११॥ ॥दूनेरुनिकुद
मानिकुयवाहननकुली।कुमदीहनागनाजा नाकुवीनवहनन॥कुवहनवमिसान कुद्वमावकर्न कुयु
कायग कुलमावकर्न कुमदीननाजाभावकर्न खूनवाधभावकर्न॥१२॥ ॥पीगादावसहयागि युवव

२५

विमहि यत। गृहायात्रः सुतात्यकिः मनःपयनिनासहः॥ मिश्रयात्रावस्ति मूयुः गुणदर्मसनाइहास्तिनाः
 सक्तुसकृद्वनिदानयादा कायवूयकाव यूनवकसंमनेनसिकका धस्वगायुः॥१३॥ ॥कवयःकिन
 यथानि किनरुक् निवायसाधयमादाकिनकवेनि किनजलानिमशया॥ यलुनयनिमं कुमखदकाव
 नकुमनव मिश्रानकु कर्ममया क धनकावनकु धर्ममन्त्रक॥१४॥ ॥यूययथाजनरायो युगाधियुयय २७
 जनाः॥दिनयथाजनमिर्षु सर्वमासंयथाजना॥ कायदययार्निनि धवकटंयिगुधयकयार्नि कायमाल
 धवकायेह मियायन मिश्रमाल धवधवसप्रयाजनरुक्कया समर्पमान॥१५॥ ॥समूदावनवमिः॥याका
 यावज्जगृहाः नप्रदावनवगादगा चविगावनवगाधुज॥ समूदगदाव युधी याकावनवदावकु नाजाहर्नदग

न ३

६४

कु २

नद्व नित्रिहर्न धवचत्रिहर्नकाव॥१६॥ ॥नगृहानिनवासानि नयाकावर्णनरुक्कनव नववर्ण
 वा सुगीलासं कूलक्षियः॥ कुयायासया याकावन नकायादामश्व वधर्नवधर्नमयास्यर्न सुधीरुका
 धवगीलहर्न॥१७॥ ॥नदीयानधर्न कूल नात्रीयानधर्न कूल नात्रीयानधर्न नदीनाधर्न सुकुनललिनागतिः॥
 नदीगीनदकां ननकर्न मिश्रानधवकूलकाकारं मिश्रयात्रावसर्न नदीयात्रावसर्न सुकुननयवनय
 रुना॥१८॥ ॥लगायाव्येहिर्नवृक् रुयायाव्येहिर्ननृयः॥ याव्येहिर्नयूनवयाविद्वयनिनसंगय॥वि
 माकासयाद गुविन सिंगयू नाजानधवयागवाद कमानयू मिश्रयात्रावसर्न धवयासगवादकगय
 नययू धधर्नसंगयममानयू मिश्रय॥१९॥ ॥नेवयधर्निजानधः॥ कामा नवयधर्नि नयधर्निम
 दाहाहा प्रथिदाधानयधर्नि॥ वास्वुनिकानर्न मखद कामाधर्नमखद अहकावनवश्वकन मखदः

या ३

२१

अथि नर्कनं दास्य सर्वदृशना ॥ ८० ॥ ॥ जीमू मर्नं प्रगस्य न हार्थो यगमो वनं । नक्षत्र गणना ३ पुत्रं न
 यथै गृहमागम ॥ जीमू मर्नं नयमू नहि श्रीशत्रुसाजीवनवतकावलिं गृहशत्रुसा संप्रामनजं
 नयाव ववर्कहिं गव नस्य शत्रुसा कुथनकावलिं गव ॥ ८१ ॥ ॥ लक्ष्मी लूक वहीनय कूलहीनमयः
 नी अयात्र मरुना नी गित्री वसे निवा सव ॥ लक्ष्मी मदायाक श्रीद लक्ष्मी कूलहीनयाक श्रीगव
 नसनी अयात्र मरुमयानि विरूद स्ययव रस वागावकाथं ॥ ८२ ॥ ॥ यथाहा यो विप्रयाकी कसा
 नी कलहः प्रियः ॥ ८३ ॥ ॥ रुद्रा रुद्रवादी व सन नानजनाजना ॥ गवर्क्या निवि विप्रयखात्र सो रामलाक
 कवडिया ॥ ८४ ॥ ॥ रुद्रा रुद्रननाययव धर्मि गवि विजना मखूजनाक्षय ॥ ८५ ॥ ॥ यथाहा यो सवृया
 व रुद्रा मरुमा मिनी । निर्य मधूत्रा सीव सात्रियाननियानिया ॥ धनर्क्या निवि सवृया यन

२१

गृहमू४

आलानकाव द्विथं वाकवचनका कक्षी धयानाणीक्षय ॥ ८६ ॥ ॥ यथाहा यो गृहनिर्गु
 निवयविगर्ज निरस्य सीदनि गात्रा नि यद्विनी वादिमागम ॥ गवर्क्या यकु स सीन द्विथं
 न्यायव सिवानडकाथं धर्क्या गत्रीन अतिदूःखशत्रु निरखं दयलवर्कथं शना ॥ ८७
 ॥ ॥ यथाहा यो च माने वहिरका विनि वद्वं नरस्य गात्रा नि गुह्य यक अथागनि ॥ धर्क्या
 याकु स सीन मामथं हि नया यव शत्रु धयानाणीन वद्वं मानशत्रु धकलाया चन्द्रमाथं
 शना ॥ ८८ ॥ ॥ किजाने वद्वं हि ॥ ८९ ॥ ॥ लक्ष्मी सनायका नके ॥ वनमक कूलालसी यथावि
 प्रमनकूल ॥ लक्ष्मी कायदयावकाय साक सनाय विवशत्रुदासी कूलधनलपूश

नदास्यं शुद्धं गगनं कलया विष्णुम विवर्द्धय ॥ ८१ ॥ ॥ उक्तं शाखाय ४ यथा दहती
 दगधनवशक न्याका लावसा ननु नगमयानि विविक्त्या ॥ निविशुद्धं १ कायसुद्धं २ गत
 नगुति २ द्वायदवगाति १० लिङ्गा क्वावधनर्क्या विकालनायमरुवर्था ॥ ८२ ॥ उक्तं
 वदवयूना गयामकायदिवजग यजुरुयागमधन नीलमोदुसमूत सुजग ॥ ननर्कक
 यदनसां कदाचिन् शुद्धकाय गेयावर्तिवर्णार्थन अग्रमधयद्गोक्त नीनेधमाडुक्
 प्रनय ॥ ८३ ॥ ॥ उक्तं ननु शुद्धकला दक्षमाननवदिना दक्षमनदन सर्वं कूपुलक
 लयथा ॥ शुद्धागं दसिन् भवेनेवन समस्तवनदकी दहनयनी कूपुलक कान कलः

दक्षामावकार्थं न ॥ ८० ॥ ॥ उक्तं नापि सुवृद्धा यथीननसुगमिता वासिर्नदन सर्वं सुपुत्रल
 कूलयथा ॥ शुभासिमा वाहावव नागा कन रुतार्थना सावकर्न सुपुत्रल कूलनयना सावका
 र्थ ॥ ८१ ॥ ॥ यस्य यथावगा रुहा सार्थं शुद्धानूगमिनी विरुवद्यपि सुदुष्ट ४ स्वर्गोक्त समहीतल
 ॥ गवर्क्या काययनि सुवकयनि निविधववगा सर्वग्य धननगा कर्क्या यथी संस्वर्गेश्वर ॥ ८२
 ॥ ॥ यस्य यथा सुविदुर्वेष्ट ४ सयिताय मुयायक ४ कलीययुविष्टा ४ साहाय्ययुनिष्टु निष्टा
 गवर्क्यववयावगा शर्न थयुष्ट गवकायाववूनया गलयावगल थवववक्षाय थययसविष्टा ४
 यथमिष्ट गवर्क्यायुष्ट यूनययावगा शर्न डायुष्ट ॥ ८३ ॥ ॥ यस्य जिवजिजीवनि विष्टुमिष्टयवध

वाशसुरुलजीविनस्य निः। आत्मा र्थकानजीवति॥ गवर्कनम्वाल् न्वाठयाना वाक्कुणमिप्रवाभदधर्कयान
 न्वादासुरुलधन्वाकक्षय॥ १५॥ ॥ सजीवतिगुणयस्य यस्यधर्मसजीवति। गुणधर्मविद्वानस्य
 निरुलनस्यजीविनं॥ गवर्कमनूयगुणधर्मसु विकनन्वाकधर्कन्वाकक्षय। गुणधर्ममदार्कय
 निरुनन्वादाया॥ १६॥ ॥ वावासनस्वगीयस्य शार्मानूयवनीसति। लकीस्यागवनीयस्य सरुल
 नस्यजीविनं॥ धर्कयाववनसु सनस्वगीयानास्मिन्नुयवति सतीश्वरं लकीस्यागवनीश्वराध्यावा
 दासुरुलक्षय॥ १७॥ ॥ धर्मार्थकाममाकानां यस्यैकाचिनविद्यते। अजागवन्ननःसाधि निवर्तयस्य
 जीविनं॥ धर्मजुर्थकाममाक गवर्कनयायू सदयूश्वरा मजागवन्या धन्वादायानिवर्तयक्षय॥ १८॥
 मने

॥ धर्मस्य विद्वानस्य दिनया निव विविदिमां सनादकालवसुण स्वमस्त्रैवयुजीर्जनं॥ धर्मस्यमद
 या दिनवर्ना अक्रियानधश्च कालयावर्तसंथं धर्मधर्मजीवनयावनाशश्च॥ १९॥ ॥ गजाव
 यिगुणवावा दावावावागुनात्रयि। युक्ति युक्तवयाप्रश्न नवावागुनूगोत्रवात॥ गदूयाश्वस
 नं गुणस्वकायआग्य गुनूयादायस्वकायआग्य युक्तिस्वयाकायदनमाल मिश्रयोश्चनसर्नदा
 स्वस्वकायआग्य॥ २०॥ ॥ अकुरुवांनकरुवां यालेऽकलुगनेत्रयि। कुरुवाभवकुरुवां यालेऽ
 कलुगनेत्रयि॥ मज्जादलयायमदव कलुगायावधनसर्ना अदलशकोमाल कलुगायावध
 नसर्ना॥ २१॥ ॥ विद्वानकासावर्मप्रहृदिनीयऽनकऽसमार्क॥ ॥ ॥ कालत्रविद्युना

३०

सन्नि कलमिषु विग्रहः कार्यकावगमाहृष्ट कालं कथयति यल्लिङ्गः॥ कालसंग्रहप्रामाण्य
 कालसमिपवाविग्रहयाय कार्ययाहृष्टान कालहनयल्लिङ्गजनन॥ १॥ ॥ कालः यत्र निरु
 नानि कालः सह न यजः॥ कालः सूक्ष्ममृजगति कालादिद्वित्रिक्रमः॥ कालनद्यालियाव
 वीनिव कालनयजसंदावशयव। कालसदन कालसंजागनावान् थयिग्वकालगुलियाल
 कमजीव॥ २॥ ॥ कालानुप्रलोहनवीर्जं रुलं कालानुप्रवरुन। कालः प्रवरुनसृष्टिं प्रमः
 कालाधिर्संदन॥ कालयाकनानयुधय कालगरुलदय। कालयादानं सृष्टियाय क्रानं क
 लनमाचक्रिव॥ ३॥ ॥ खदिलोहमिनायय चला क्राननमानुनः सर्वसंदनकालनस्याकाला

३०

महर्षेः॥ आकाशदिगाद्युधालंखचतुमासूर्यमरुसधनसमस्तकालनमाचक्रयुधनयाक
 कालगुहिनव॥ ४॥ ॥ किंकनिश्चयिवाव (आकाशचनविग्रह। नग्नः कथनकग्रामनज
 किंकनिश्चयि॥ कयायकायाव गनथायस दंढमदल यत्रिहियाद कथनकयाग्रामसव
 सुममालयठसिचिचिवाकाय॥ ५॥ ॥ कदलीवनमधुका वद्विर्मन्नायनाक्रमः प्रवित्रक
 जनकान् पुनवान् किंकनिश्चयि॥ कनीदडावनस गयाम वलाकंदकायमरुथं विचालमः
 वाजनयाथायस पुनवनकुसखल॥ ६॥ ॥ प्रलयहिन्नमज्जाकारुवन्नि किलसागवः साग
 गारुदमिचुकि प्रलययिनसाधवः॥ प्रलयसं समुद्रन मज्जाकामधनययकव साधुजननः

३१

शुक्रया सागत्ररुदयायमयव प्रलयकालर्ण॥१॥ ॥ मयूष्यत्रिकल्यान मर्जोदसादत्रयैव
यमित्यन्नमहाप्रला नचलनिकदाचन॥ कल्यानसमूहमनूचनलय समूह न सिमान मधुप्रयू
महायनूषणशुक्र विहिउलालमचकवयूणात्ररुदसर्न॥२॥ ॥ विद्यनक्षीयूचयला विद्यन
ब्राह्मणनयशयात्रुर्कविद्यननीच दयासाधूयूविद्यन॥ क्षीयाकचयलादव ब्राह्मणयाकनय
दव शुक्रवचन नीचजानीयाक दव साधूयाक दयादव॥३॥ ॥ साधूसन्मासमात्रेण रुतः
निदहविक्रिया डयकात्रगमनादि दुर्जनकनगृह्णत॥ साधूजन सन्मानयादन थवसनिनः
निर्ययनागशयू दुर्जनयाकशुक्र सनक्षिनाडयकात्रयागसर्न सुनार्न थवयायमजीवी॥४॥

यूषवाधुनिगाशुनि नावर्द्धेण शुक्राधयन् प्रयुक्तमिदं नदीयचक्रहीनानयधनि॥ शानिश्चकणाय
वाधययजीव शुक्रानिकागशुक्रवाधयमदु गर्थुटाधयसा प्रयुक्तमर्तिकायकनल मिखास
दूनमर्नमखादर्थ॥१॥ ॥ नात्रिकलसमाकाना दयनकैयिसर्जना अर्नमिर्तुवलाकाना वहिभव
वनत्रसा॥ नात्रिकलर्थसर्जनशयू दिदनमर्तिग शुक्र दूवनशाग नलम काहु दूवनयाशय
वर्जनर्थ दिवनर्तिग दूवनमर्तिग॥२॥ ॥ यन् नगीन नचद यन् ननरुयन् नमाध यन् नय
ननया मय साधूः सम्यक् गानली॥ श्रीखर्गुनगीन यन् नमा यन् नया श्रीखर्गुवानगुडिस साधूज
नवा नाथलायगीनल॥३॥ ॥ अथमाधनमिदं नि श्रीमिमिदं नि मयमा डरुमामानमिदं नि म

नाहिमहर्गधनं॥ अथ मननययू, प्रीति ययू मधुमजनन मानययू मानययू नवदकं याधन
 ॥१५॥ ॥ मन्त्रिकावृणमिच्छुनि धनमिच्छुनि पाथिवाधनीवकलुहमिच्छुनि, गान्धिमिच्छुनि साधवा॥
 शाकिनिनद्यालस लयययू, राजायाधनलयययू, नीचदकं लोयययू साधुजनदकं गान्धिरय
 ययू॥१६॥ ॥ नृनाथमिच्छुनि, नृयमिच्छुनि दानिकाशकानयः कूलमिच्छुनि, स्वर्गमिच्छुनि ना
 ययू॥१७॥ ॥ नृजनदकाद धनवाधुमययू, नृयवाधुमययू मधुमभावागोयनिमन, गणदकासर्गक
 लवाधुमययू, नयवीयनिमन स्वर्गवाधुमययू॥१८॥ ॥ अतिक्रान्तययू अतिक्रान्तययू
 सखी, यवयाजययू अतिक्रान्तययू, नवसाधुमययू अतिक्रान्तययू, नवसाधुमययू अतिक्रान्तययू, नवसाधुमययू

कथिजायायधनसाधुजनयाकमदू॥१९॥ ॥ नमस्कृतं नालरुतयाज्ञा अकार्यं नवकालययू, स्व
 कार्यनकार्यं निसृलं नवमवययू॥ कानिर्कन मरुयागुलिसे अत्रममयाक अकार्यमयो कथि
 कूनिद्रादकार्ययाययू अत्र निसृलेगुलिसे वलथमनव॥२०॥ ॥ निसृलेगुलिसे वलथमनव॥२०॥ ॥ निसृलेगुलिसे वलथमनव॥२०॥
 नगजगज। साधवानहि सवृत्त वन्दननवनवन॥ यवययू निसृलेगुलिसे वलथमनव॥२०॥ ॥ निसृलेगुलिसे वलथमनव॥२०॥
 धूमकनरिर्नमदा गुयनिर्ग्रीखलुमदा॥२१॥ ॥ यवययू निसृलेगुलिसे वलथमनव॥२०॥ ॥ निसृलेगुलिसे वलथमनव॥२०॥
 दृक्कार्यं निवृद्धि, राजाकार्यं निवृद्धि॥ मवयाकार्यं निसृलेगुलिसे वलथमनव॥२०॥ ॥ निसृलेगुलिसे वलथमनव॥२०॥
 साधलथ मित्रयाकार्यं निसृलेगुलिसे वलथमनव॥२०॥ ॥ निसृलेगुलिसे वलथमनव॥२०॥

३३

नरुर्गनलदधन अचलमविमधुनां निलालखवनिष्ठमि॥ नीचयाकार्यलं सआयार्थं धामु
 नं सयमदू साधुजनयाकार्यं सचलनधमरुद लक्ष्मसायार्थं वानिवा ॥२१॥ ॥ महानमायव
 ४ सन्नि महनामविमस्यद ४ ॥ नत्रवमनूभाय नायदानेव सम्यद ४ ॥ नवयाआयदां दव संयदी
 दव विवामनूयाआयदां मदा संयदं मद् ॥२२॥ ॥ ममुमुयानियर्कं वयुगममवचनुमा
 विष्णुसमनगमागुग महर्गकत्रसंयुतं ४ ॥ महादवसनुययार्थं जर्कं पातन चनुमासनुययव
 लमग विष्णुसंनमयाय सुमनयाव नवयूयसंनमयाय हाथजाऊलयाव ॥२३॥ ॥ लखक ४
 ० कथेव येवायनामुचिकका ४ ॥ सर्वयसनिनामूरा ४ क्रियावन्धयविन ४ ॥ आक कौ पात्रयुर्ग
 ॥ ॐ नमो ३ । लिहनायनमा ॥

३३

ममुसवयनिधसममुं वगनदाकं मूर्खक्रिया कर्मयाका क्रियावन्धयविन ४ ॥२४॥ ॥ आदित्य
 मयवागिर्क नाऊसवानयाधनं धीनायलात्रिकूवेनि कातनाकुविवाहका वाहनवनिजान
 गठवनिजान नाऊसवानयाधनधनर्गाधीनका निधनिसनयाय कातनयनिधनरु कया का
 आयाय ॥२५॥ ॥ वउर्दनाथावानि विद्यार्थोचवदुर्गम ममुकालमयथाथो मानार्थो नुवनि
 वउर्द ॥ धनार्थोयनिधन वनऊयायाययाय विद्यार्थो नऊनगममुठनीव युरुर्गार्थोयाकनम
 मुकालेगमनयाय मानार्थोयाकन नाऊसजाय ॥२६॥ ॥ मखयदूनाकार्ग वायावन्दन
 नीतर्ग ददयं कर्हि संयुक्त विविधधुर्लक्षणी ॥ कूप्यलपनिर्ध कामल याकूवचनधीखधु

४

प्रीतिगण. लूंगाउक हि धं धनकाधूलेयालकनभय ॥२०॥ ॥ दूर्जनः प्रियवादीयेनेवविष्वास
 कात्रयन्। मधूयवनिजिजागु. रुदिहालाहलविषं ॥ दूर्जनः य. यकोनहुकाक. विष्वासमयाय
 क्रमिमयोसहस्यवयू. लूंगाउगहलाहलभया. विषयंयानयू ॥२१॥ ॥ खलः गर्भयमाजालि
 यनविद्वानयस्यति। आत्मानाविलमाजालि. यधननयिनयस्यति ॥ दूर्जननमवयाविद्व. प्रकायाय
 अर्द्धखाह. यवशनदाव. यात्यायअर्द्धमखाह ॥२२॥ ॥ दूर्जनीयाधयमूर्खः धनवन्धनिरुधः।
 दूनरुधियवदधन. किंलुकावूवयूयिना ॥ यवर्कमनूर्खदकादगनयायू. धनियनि. निरुधिदकाद
 नसवानमनीसायूव. लाहासिवाहावर्थ ॥२३॥ ॥ मूर्खोयियनिहहया. यलकोदियदः यलुगहि

यनवाक्यगल्यन. अदृष्टकणकायथा ॥ मूर्खजातिहवर्कनाउतमाल. यलकयलु. नयूगानयलु. वय
 नहागदाव. यूनयनवर्क० यायूनमनूवर्थ. यथावियू ॥२४॥ ॥ सूर्यकुनः खलकुनः सूर्यकुनः
 ननः खलः मन्त्राधिवसः सूर्यः खलः कनायनामाति ॥ सूर्यकुन. दूर्जनकुन. सूर्ययाकनान
 दूर्जनअतिजक. काकानधनसा. मन्त्राधिवधन. सूर्ययायूयायजित. दूर्जनजाति. कुननाड
 यनीमायायमजित ॥२५॥ ॥ हसिहसमहप्रग. गनहसुनवाजिनः। गृणिनादगहसुनद
 गत्यागनदूर्जनः। किंनिवा. दालचिकू. याचक. गउवा. गनचिकू. याचक. दादवजिकू. याच
 क. दूर्जनवाशनदाय. दगनात्रगानहुडवाद्ययूव ॥२६॥ ॥ हसिनांकुगहसुन. कतिहसुनव

जिनशर्णीगत्रमुहहसुनखसुहसुनदूर्जन॥ किनिवाजुंरुसजादवानगठवागानकआकानव
 नर्णीगीवाल्हआदवानदूर्जनवाशकखसुआकववाभमाल॥२४॥ **॥**दूर्जनयविहर्कवाग
 सुलालंरुगाजतिमनिनालंकुतास्यो॥ किमशोनरुयंकन॥ दूर्जनरुकाउनगाग्यगामुस
 वरुनसर्नागठनमालमनिनरुखलयाववाहसर्नाधस्यवासग्यादायनाधननदूर्जनय
 सगाठनमाल॥२५॥ **॥**याजायाहविणखणधनूयनगथायेथा। हगाति॥ वनकीनीकीनाति॥
 वनविष्य॥ याजुयाहविणखणद्वाद्वासावावीवार्थ्यासनकानदूदवयिवसायाकनदूद
 गानकानविषवयिववीयाकन॥२६॥ **॥**कुरुगुरुमिनिमलाभावयनकदावन। कालदूर्जनम

यातिहणसंबद्धिवीजवन॥ विवागदुधकंरुनयमतवगवतसर्नकालवलसदूर्जनवल
 ववासासशकमीयर्थनलवासावयवख॥२७॥ **॥**अष्टीककनकदासाआनीमिधुयि
 गल। गनकानववाउवकुदुस्याननविद्यन॥ अयना६०यालयाकदासनचयना८०नियुमि
 खायाकनवकु१०० ताकानयाकखलयाकधूसियाकशकडलधलधकंअनसयमद॥२८॥
॥स्नानकूठदूनावात्रमेहस्रहंयनिखजगु। विष्वाससमयकाशविनागमूयनकुमि॥ आनस
 यादकयनिदूनावात्रीवामिहुरावस्रहागठनमालकानधनसाविष्वासयागकाशकार्यनागज
 यरुव॥२९॥ **॥**मुदूनेवमुदूहनिमुदूनाहनिदानूनी। नागाधमुदूनाकिथिरुसाहीकननामु

दू॥ नायून काहु भावकयू नायून काहु भावकयू नायू साधनय मजीव धनन नायू काहु भावकयू
 नैकाक भाय ॥४०॥ ॥ वनयुक्तलिगावद्धि दह नूला निवक्रति । समूलमूललयति । आसाधामय
 नागली ॥ गुं स्यास्यं हया मन नलकास्यं भायूव हाशकलद नवलखवलकाव हागंयं भावक हव
 नायूगीनलन ॥४१॥ ॥ सुलनौमवलिवद्ध कंयाववक हासिणी दुअना निवक्रति दूनत ४ यनि
 वक्रयत ॥ सायूलाक धसा खंवा कया ग्यायवव धनयाननं गाउत माल ॥४२॥ ॥ नह स्यरुदः
 मेथूयं यनदायानूकीहिना कलदयुक्तिश्चैव दूनत ४ यनिवक्रयत ॥ गुयनखंयिनकव विपूल
 वक्राक मवयादायखं दालशव लायुयस्यं शव धनययाननं गाउत माल ॥४३॥ ॥ अययाननं गज

मरु ४ गावयेवयसुतिकी । तथाअन ४ अनादागी दूनतय निवक्रयत ॥ गज (ग) किनिड मरु शव नकव
 वसा सिंधुका निड मिग धनगायावकं गाउत माल ॥४४॥ ॥ दूऊन अं सदा मिर्त यन ४ सा मिनगा मुीय
 । गजगीर्त वमुजी ४ अ दूनतय निवक्रयत ॥ दूऊन याति मिर्त यनयूनयनत मिग जिथी सा जीर्त
 दवमु धनयाननं गाउत माल ॥४५॥ ॥ नविष्ठा सद मिर्तय मिर्तया यिनविष्ठा मुन । कदाविलु वि
 ना मिर्त सर्वगुर्तयका सयत ॥ वेनीव यकिनविष्ठा समनव मिर्तया विष्ठा समनव कदाविलु मिर्त
 नमवानदाव समरुगुयनदकायका गयाय ॥४६॥ ॥ नविष्ठा सद विष्ठा स विष्ठा सनेव विगमं ता वि
 ष्ठा मरुयमूलनं मूलानेव निवक्रति ॥ अविष्ठा सकंयाक दूनविष्ठा समनव विष्ठा सकंयाक वि

३८ विरुमद्, श्रुवा लया कश्चिदां मद ॥ ५५ ॥ ॥ अविद्यो विप्रमनिश्च, दं यथो मुनू निष्ठायाः अकर्म नैव
 गन्तव्यं इत्यवृत्तं स्यात् ॥ वाक्कलनं कर्म, अकर्मणं, मववाक्कलनं वा अकर्मणं, स्त्रीषून्मवा, अकर्मणं,
 पुनू निष्ठाया, अकर्मणं, महादव सवा, धसावा, अकर्मणं, धनं स अकर्मणं वनमनं व ॥ ५६ ॥ ॥ लोक
 मापारुणं लोका, दक्षिणं गगनी लता, यं य अहं न विप्रक, न कू यो रुद्र संगतिं ॥ लोक, याग अरु य विप्रः
 राज, नव सागी, धका नाग्यथा य समदातं, धथा य स नायं लावक मठ व ॥ ५७ ॥ ॥ न अरु नं गुह्यं यानि
 वकल्य अरु वदुर्गं, न नानी कि न वृद्धि स्या, त्मसूखं स कर्म वदत् ॥ आज न नायक मरु, विकल लावतव
 द, अरु मरुव, मिनाथी न वृद्धि मरुव, सूखं न संसृ, त हा स क्ता य म सव ॥ ५८ ॥ ॥ मय (ग) सा इति (ग) य म्वा

[illegible]

४०

मयं चोत्रः समुद्रो मयूनाहितः नग्राहं किं कविष्यामि यथा न कृतं नारुयं ॥ ग्यदसं सनाकाथमथ थमस
 खं मकु यनाहित खूश नदास्यं धथाय सजन कुयाय गनान कन वूमू इत अनानै रुय इत ॥ १२ ॥
 विष्णुगुलिखिनायस्य ललाटाकनमालिका देवायिनदिगक्रानि संलिख्य लिखिगठयून ॥ विष्णुगानर्क
 मातसयासहया आखन दवनं चायदूय त्रिभूतमदन ॥ १० ॥ ॥ कर्मलोहिप्रधानन वृद्धिना किंयथा ४०
 जनैः यायायस्य कृता वृद्धि सुनदवाह विद्यानि ॥ कर्मप्रधान वृद्धिधन ज्ञानि शया कया रागी मशवर्त
 वलाहाया गना वृद्धि धनदवशव ॥ ११ ॥ ॥ कर्मोन्नायिप्रधानानि सन्निकृष्टगुरुग्रह वनिष्ठदल
 लग्नादिजानकिदूःखरागिनी ॥ कर्मरागप्रमान हिमवात्सल्य गुरुग्रहयादा कार्यानामदा

या इय गार्ध्वधनसा वनिष्ठमिदार्थि ग्यर्कन विद्यालग्नस विवाहायात गीतादूःखरागी इत ॥ १२ ॥
 मानकूलरुवरुमिन् दायायिगुणमहं किं गुलोविदायनायाति वकीरुन विष्णुनि ॥ अनूकूल इत
 कास्य दायायालगुणमूदाववर्त विष्णुविमुख इत दाव गुणया लंदाय इत ॥ १३ ॥ ॥ किं कर्माति
 नत्रः यादूः प्रजमानः स्वकर्महिः यायनेत्रमनूयाणं वृद्धि कर्मनूसाविणी ॥ ज्ञानिकर्मनूकूरुयाव क
 वक्ताय थव कर्मण कूयाथं मशत्रमगाक मुखयावकूल दव वृद्धि इयू कर्मलियू ॥ १४ ॥ ॥ कर्मस्य
 रुषर्णदानं सत्यकलस्य रुषर्णं गुरुय रुषर्णकल रुषर्णो किंयथा जनं ॥ यासथया अलं कालदा
 नं कं० या अलं कानन सत्य कूसयाक अलं कानन धर्मोखं दन आरुन गति यावय याजन कूयाय चाय ॥

५१
 आ ॥ अविहृष्टं सर्वं श्रीनां दुमानां यथा सुखं । स्ववृत्तिं सुखं यथा अतिनां सुखं कथा । श्रीमा भूतं
 कान सुवविहृष्टं सिमाया हो सो वृद्धाया वधानं । मिजनया सुवृत्तिं सुवृत्तिं नयनसाह । स्वामिसा
 ललाह दयाशय ॥ १५ ॥ ॥ नक्षत्रं सुखं वदन् । नात्रीनां सुखं यतिः । युधित्री सुखं राजा । नीलं सर्वं
 सुखं ॥ नक्षत्रं या अलं कालं वदन् । मिमाया अलं कालं यन्मय युधित्रीया अलं कालं राजा । समस्तया
 अलं कालं शकार्या सुविनीलं शय ॥ १६ ॥ ॥ महतामयिव (ग्रह) ननीयमानमूरुमं । कंसात्रीया दद्या
 ४९
 ४ न कालीयस्य विहृष्टं ॥ नवनया दक्षत्रकाया अयमानं हिम । नीयया शनकाया मानमसिग
 नाथं अत्र सा कस्य येन दुर्गनमना वगया कालीना गयार्थं (ग) शनं ॥ १७ ॥ ॥ सुविहृष्टं मिगर्गं नायं शु

विनात्रीयविहृष्टं । सुविहृष्टं मकना राजा । संनाया वाक् (१४) सुविहृष्टं । सुखां गलं स्वहनकाव सुविहृष्टं मि
 नायविहृष्टं शनकाव सुविहृष्टं । राजा कमा अत्री शनकाव सुविहृष्टं संनायी शनकाव वाक् (१५) सुविहृष्टं ॥ १८ ॥
 सुविहृष्टं मिगर्गं नायं यत्र लयानविहृष्टं । लयस्मानं यतिः अत्र अनास्मानं सुविहृष्टं सुविहृष्टं । वं सदायाम
 अत्रां गलं स्व सुविहृष्टं याया अना उनाव सलयां गलं सुविहृष्टं सुविहृष्टं ॥ १९ ॥ ॥ रुमानं सुविहृष्टं काथं ना
 प्रमस्तेन सुविहृष्टं । अजया सुविहृष्टं नात्री नदी वगन सुविहृष्टं ॥ नलिनवायाव कंग सुविहृष्टं । मिजलयाउ
 नवायाव सुविहृष्टं । मानिक शवन मिगा सुविहृष्टं । स्वाया वग द्वा कन सुविहृष्टं ॥ २० ॥ ॥ विहृष्टं
 ४ यूनं दद्यात् । मातु दद्यात् । लदानं । (ग) यथा लसमं दद्यात् । स्वयं भव कृषिं वृजम् ॥ वदया कनान

४२

अरुद्रनविष्णु सामयाकनान् लानसविष्णु सामयाकनान् धमवा समनविष्णु धमरथधर्मवसक्षाका
 यागवन ॥८२॥ ॥ कविलाकीनया (वन वाक्कलीगमननय) वदाकनविद्यानय सभुधाननकी ॥
 वज्र ॥ कविलसायादूदलदान वाक्कलीगमनयादान वदाकनविद्यानयादान धमकभुदन ॥
 नकवेनिव ॥८३॥ ॥ गृहीहसुनयाहुक साममकनिवननी जिद्यमानाहवकुद्रामनस्वान ॥ ४२
 ग्याजायन ॥ गृहिणीयालाहथन लक्ष्मिनादिथनमयाथान धर्म सामागृहश्रुत धेककवाकसीः ॥
 गदाव स्वियाश्रुय ॥८४॥ ॥ गीलहीगाहुयानात्री धृगहीनैधुशुनी वसुहीनैमलकालविशाही ॥
 नदिआरुस ॥ दूदूमयागवर्कमिगाश्रुत यत्रमदयकनयाशुत वसुहाथनगनियाऊधूलंकारिय
 नन

४२

विद्यामसव वाक्कलीधनदल्लारव ॥८५॥ ॥ गोरुनगसिलयदां गोरुनदिविजदिविजवा (गोरुननयसायुका
 वृगंभूलस्य (गोरुन) लखवाकयल (गोरुन) वाक्कलीगमनयाकनान (गोरुन) नययुक श्रुतकाव (गोरुन)
 न सुनयाद्यानसाशुनी ॥८६॥ ॥ यज्ञेन सर्वेश्वर विद्यार्ण मुखानीकलकासर्व यून्यानसर्वधना
 नीनी गवाधायरु (गोरुन) वाक्कलीयाडकाहा यरुयाय मुखया कनदुडकाहा मिसाओडकाहकलं
 यून्य सायाडकाहा नकयुलिजावद्यासशना ॥८७॥ ॥ अग्निहाउरुलं वंर्ग गीलवृहिरुलं धर्मी ॥ नः
 निवृत्तुरुलानात्री दलकुकरुलं धर्मी ॥ वेदसयाया रुल अग्निहाउयाय गामुदकायारुल गील
 रिनक सुगमनयाकारुल कायदयक दामदयकायारुल दानयाय रिनकनयमान ॥८८॥

४३ अग्निर्दहति तावत् सूर्यो दहति त्रिसिंहा राजा दहति दधुन तव सा वाक् (गा) ह प्रतु ॥ निनदहत्तुः
 बालानः सूर्यो दहति तव किं तव राजा सूर्यो दहति तव दन्तया य वाक् वनदहति तव पंथा ॥ ८२ ॥ ॥
 सनभर्कं मृतं मांसं कजं वयिर्गदविभक्तं न्यादन्तं चर्षय ॥ तुल्यं (गा) मांसं सतं कर्णं ॥ नालमाया कसिकया
 ला लाहथनहिया धमि चालान वावाया धमं (गा) मांसं सनया डाहुत् ॥ ८३ ॥ ॥ नहन्त्यान्मनिदयात् ॥
 हव्यमाना नहन्त्या ॥ यत् ४ संकां यत्रिहत्तु रुक्मं मांसं यद्विहिता ॥ थमस्या यमत्तव स्यात्तु ननप ॥ ४३
 धकमत्तव स्यादा स्वयमत्तव धमत्तव मात्तव आद्वि यद्वि त्र राजा सनलानयटा धमद ॥ ८४ ॥ ॥ न
 मांसं कर्णं दाप्यं नमश्च नञ्च मेधुनी ॥ यद्वि त्र तव मात्तव निवृत्ति मुमहाहर्त ॥ लानयानं दोषमद ॥ ८५ ॥